हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

04191

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2015

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) सब शासन व्यवस्थाओं की नींव सामयिक भूमि व्यवस्था पर ही होती है । किसानों की ओर से सरकार पर आते संकट को टालने का फ़िलहाल यही उपाय हो सकता है कि वे अपनी समस्या सांप्रदायिक झगड़ों में भूले रहें । यदि लीग और काँग्रेस आपस में नहीं लड़ेंगे तो अब सरकार के लिए इनमें से किसी एक को भी दबाना सम्भव नहीं रहा है । जेकिन्स तो कैबिनेट मिशन को यह दिखा देना चाहता है कि हिन्दुस्तानियों को शासन का अधिकार सौंपना व्यावहारिक नहीं है । अगर यह योजना सफल हो जाए तो अंग्रेज़ गवर्नर की ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी ।

(ख) अंग्रेज़ की कचहरी में इंसाफ़ होता है । वकील पढ़े-लिखे । कानून लिखत में दर्ज । इंसाफ़ का घर है कचहरी-अदालत, तटठुम्मनों का डेरा नहीं कि जिसके जो मन में आया बोल दिया या फ़ैसला दे दिया । "आपसे कहे मुताबिक़ तो मुकद्दमों की रुबकारी बिला रू-रियायत भुगत जाती है ।" "बिला-शक काशीराम ! आज का फ़ैसला मद्देनजर रखकर क्या कहा जा सकता है कि मुंसिफ़ जज ने फ़ैसला सही नहीं दिया !" काशीराम हँस दिए – "इस फ़ैसले का सेहरा तो आपके तजुरबे, मुस्तैदी और तारेशाह की बिछाई हुई बिसाते – शतरंज को है । जो चश्मदीद गवाह हमारी तरफ़ से पेश हुए उन्होंने मुकद्दमे का मुँह-माथा ही बदल दिया ।"

(ग) वे बड़ी गंभीरता से बोले कि देखो, ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन् उस ज़िन्दगी का चित्रण करती हैं जिसे आज का निम्न-मध्यवर्ग जी रहा है । उसमें प्रेम से कहीं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया है आज का आर्थिक संघर्ष, नैतिक विशृंखलता, इसीलिए इतना अनाचार, निराशा, कटुता और अँधेरा मध्यवर्ग पर छा गया है । पर कोई-न-कोई ऐसी चीज़ है जिसने हमें हमेशा अँधेरा चीरकर आगे बढ़ने, समाज-व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुनःस्थापित करने की ताक़त और प्रेरणा दी है ।

(घ) शिक्षा के मैदान में भम्भड़ मचा हुआ था । अब कोई यह प्रचार करता हुआ नहीं दीख पड़ता था कि अपढ़ आदमी जानवर की तरह है । बल्कि दबी ज़बान से यह कहा जाने लगा कि ऊँची तालीम उन्हीं को लेनी चाहिए जो उसके लायक़ हों, इसके लिए 'स्क्रीनिंग' होनी चाहिए । इस तरह से घुमा-फिरा कर इन देहाती लड़कों को फिर से हल की मूठ पकड़ाकर खेत में छोड़ देने की राय दी जा रही थी । पर हर साल फ़ेल होकर, दर्जे में सब तरह की डाँट-फटकार झेलकर और खेती की महिमा पर नेताओं के निर्झरपंथी व्याख्यान सुनकर भी वे लड़के हल और कुदाल की दुनिया में वापस जाने को तैयार न थे ।

2. अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'झूठा सच' कहाँ तक सफल है ? विश्लेषण कीजिए । *10*

3. 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की अन्तर्वस्तु के विशेष घटकों पर विचार कीजिए । *10*

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के औपन्यासिक शिल्प पर प्रकाश डालिए । *10*

5. 'राजनीतिक पात्रों और घटनाओं के अभाव के बावजूद 'राग दरबारी' एक सशक्त राजनीतिक उपन्यास है ।' इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

(क) जयदेव पुरी का चरित्र

(ख) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की अंतर्वस्तु

(ग) 'ज़िन्दगीनामा' में परिवेश चित्रण

(घ) 'राग दरबारी' शीर्षक की सार्थकता

———